

राज्यसभा के लिये मनोनयन

प्रिलिम्स के लिये:

राज्यसभा के लिये मनोनयन

मेन्स के लिये:

राज्यसभा के मनोनीत सदस्यों की भूमिका, सेवानवृत्त होने के बाद न्यायाधीशों की नियुक्ति संबंधी विवाद

चर्चा में क्यों?

हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई को राज्यसभा के लिये नामांकित किया गया, जिससे राज्य सभा में नामांकित सदस्यों की भूमिका को लेकर अनेक सवाल उठाए जा रहे हैं।

मुख्य बंदि:

- श्री गोगोई, शक्तिषावदि मृणाल मरीं (Mrinal Miri) के बाद असम से राज्यसभा में मनोनीत होने वाले दूसरे व्यक्ति हैं।
- पूर्वोत्तर से दो अन्य व्यक्ति भिघालय से शक्तिषावदि बी.बी. दत्ता और मणपुरि से मुककेबाज एम.सी. मैरीकॉम को भी मनोनीत किया गया है।
- यहाँ ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि पूर्व मुख्य न्यायाधीश ने असम में 'राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर' (National Register of Citizens- NRC) को अद्यतन करने तथा 'राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद' में फैसला सुनाया था।

राज्य सभा में मनोनयन:

- भारतीय संविधान का अनुच्छेद- 80 राज्यसभा के गठन का प्रावधान करता है।
- राज्यसभा के सदस्यों की अधिकतम संख्या 250 हो सकती है, परंतु वर्तमान में यह संख्या 245 है।
- इनमें से 12 सदस्यों को राष्ट्रपति द्वारा साहित्य, विज्ञान, कला और समाज सेवा से संबंधित क्षेत्रों से मनोनीत किया जाता है।

विवाद का कारण:

- सेवानवृत्त के बाद सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश पर पाबंदी:**
 - सेवानवृत्त न्यायाधीशों को भारत में कहीं भी किसी न्यायालय या किसी प्राधिकरण में कार्य करने की स्वतंत्रता नहीं है। ऐसा यह सुनिश्चित करने के लिये किया गया है कि वह न्यायिक निर्णय देते समय भविष्य का ध्यान न रखें। हालाँकि सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को उनकी सेवानवृत्त के बाद न्यायाधिकरणों एवं आयोगों में विभिन्न पदों पर नियुक्त किया जाता है।
- सेवानवृत्त के बाद भी नियुक्ति किये जाने के निमित्त लिखित कारण हैं-**
 - प्रथम, पछिले कुछ दशकों में अधिकरणों एवं आयोगों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है, जिनमें सेवानवृत्त न्यायाधीशों को सदस्यों के रूप में कार्य करने की आवश्यकता होती है।
 - दूसरा, न्यायाधीशों की सेवानवृत्त होने की आयु (उच्च न्यायालय में 62 वर्ष और उच्चतम न्यायालय में 65 वर्ष) में वृद्धि नहीं किये जाने के कारण सेवानवृत्त न्यायाधीश अभी भी सार्वजनिक हित में अपने व्यापक अनुभव का उपयोग करने की स्थिति में होते हैं।

मनोनयन को लेकर पूर्व में हुये विवाद:

- सचिन तेंदुलकर के नामांकन को लेकर कुछ तर्कशील भारतीयों ने इस आधार पर यह प्रश्न किया है कि संविधान के अनुच्छेद 80 (3) में निर्दिष्ट श्रेणियों- 'साहित्य, कला, विज्ञान और सामाजिक सेवा' में खेल शामिल नहीं है, इसलिये कोई भी खिलाड़ी मनोनयन के पात्र नहीं है। परंतु बाद में माना गया कि निर्दिष्ट श्रेणियों अपने आप में पूर्ण (Exhaustive) नहीं हैं अपत्ति उदाहरण (Illustrative) मात्र हैं।

मनोनयन का उद्देश्य:

- **प्रसिद्ध लोगों का संसद में प्रवेश:**
 - प्रसिद्ध लोगों के मनोनयन के पीछे उद्देश्य यह है कि नामी या प्रसिद्ध व्यक्ति बिना चुनाव के राज्यसभा में जा सके।
 - यहाँ यह ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि अमेरिकी सीनेट में कोई मनोनीत सदस्य नहीं होता है।
- **समावेशी समाज का निर्माण:**
 - राष्ट्रीय स्तर पर वसिदनीय वधायिका के एक सदन के रूप में राज्य सभा का निर्माण करते समय लोकतांत्रिक राष्ट्र निर्माण की दशा में चुनाव (Election) एवं मनोनयन (Nomination) की वशिष्ट सम्मश्रति प्रणाली को अपनाया गया तथा राज्य सभा में 12 सदस्यों के मनोनयन का प्रावधान किया गया।
 - संसदीय वास्तुकला में मनोनीत सदस्यों की उपस्थिति भारतीय समाज को अधिक समावेशी बनाने वाली व्यवस्था का समर्थन करती है।
- **राष्ट्र का प्रतिनिधित्व:**
 - मनोनीत सदस्य किसी राज्य का नहीं अपितु पूरे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे सदन में राष्ट्रीय आकाँक्षाओं एवं लोकाचार (Ethos) को प्रतिबिंबित करते हैं तथा सदन का गौरव बढ़ाते हैं।
- **संकीर्ण राजनीति से ऊपर:**
 - डॉ. ज़ाकरि हुसैन वर्ष 1952 में मनोनीत 12 सदस्यों में से एक प्रमुख शिषावदि थे। उनका मानना था- “राष्ट्रीय पुनर्जागरण (National renaissance) राजनीति के संकीर्ण द्वार से नहीं प्रवेश कर सकता, इसके लिये बाढ़ रूपी सुधारवादी शिषा की जरूरत है।”

नुकसान (Disadvantages):

- मनोनीत सदस्यों का प्रावधान लोकतंत्र की परिभाषा- ‘लोगों का, लोगों द्वारा, लोगों के लिये शासन’ के खिलाफ है।
- यह प्रावधान जनता के प्रति जवाबदेहिता के सिद्धांत के खिलाफ है क्योंकि मनोनीत सदस्य किसी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

आगे की राह:

- हालाँकि संविधान में सेवानवृत्त न्यायाधीशों को इस तरह के पदों को स्वीकार करने पर रोक नहीं है, लेकिन ये नयिकृतियाँ न्यायपालिका की स्वतंत्रता को कमजोर करती हैं। अतः ऐसी प्रथाओं को रोकने के संसदीय प्रयास होने चाहिये, नहीं तो सेवानवृत्त होने से पूर्व के फैसले सेवानवृत्त होने के बाद मलिन वाली नौकरी से प्रभावित होंगे।

मनोनीत सदस्यों से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी:

- **संविधान का स्रोत:**
 - राज्य सभा के लिये सदस्यों का मनोनयन संबंधी प्रावधान आयरलैंड के संविधान से लिया गया है।
- **दल बदल कानून का प्रावधान:**
 - अगर कोई नामति या नाम नरिदेशति सदस्य 6 महीने के बाद किसी राजनीतिक दल में शामिल होता है तो उसे दल बदल अधिनियम के तहत नरिर्ह करार दिया जा सकता है।
- **राष्ट्रपति पर महाभयिग:**
 - संसद के दोनों सदनों के मनोनीत सदस्य जिन्होंने राष्ट्रपति के चुनाव में भाग नहीं लिया था, इस महाभयिग में भाग ले सकते हैं।

स्रोत: द हट्टि